NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

श्रीअन्न फसलों के प्रमुख रोग एवं उनका प्रबन्धन

आलोक सिंह तोमर, विजय कुमार यादव एवं विवेक सिंह

परिचय

श्री अन्न का अर्थ है: 'श्री' का अर्थ मोटे तौर पर दैवीय कृपा है और 'अन्न' का अर्थ है खाद्यान्न, विशेषकर मोटे अनाज। अत: 'श्री अन्न' का अर्थ है वह अन्न जिस पर दैवी कृपा हो। बाजरा, जिसे श्री अन्न के नाम से भी जाना जाता है, छोटे अनाज वाली अनाज फसलों का एक समूह है जो अत्यधिक पौष्टिक होते हैं। इसके अंतर्गत मोटे अनाज जैसे ज्वार बाजरा, रागी, मडुआ, जौ, कोदो, सामा, सांवा, कुटकी, कांगनी और चीना को शामिल किया जाता है। श्री अन्न प्रकार का अनाज है जो विश्व के कई भागों विशेषत: अफ्रीका एवं एशिया में लोकप्रिय है। यह विश्व के कई हिस्सों विशेष रूप से अफ्रीका एवं एशिया का मूल भोजन है। वर्ल्ड फूड प्रोग्राम के अनुसार, अनुमानित 1.2 बिलियन आबादी अपने आहार के रूप में श्री अन्न (मिलेट्स) का सेवन करते हैं। मोटे अनाज में कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) होता है और यह मधुमेह की रोकथाम से भी मददगार होता है। ये आयरन, जिंक और कैल्शियम जैसे खनिजों का अच्छा स्रोत हैं। मोटे अनाज वजन कम करने और उच्च रक्तचाप में मददगार होते हैं। इनका आम तौर पर फलियों के साथ सेवन किया जाता है, जो प्रोटीन युक्त होता है।

बाजरा

1. हरित बाल रोग

कारक - स्केलेरोस्पोरा ग्रेमिनीकोला

लक्षण –

रोग ग्रसित पौधे बौने हो जाते हैं, और कल्ले अधिक संख्या में निकलते हैं। पत्तियाँ हरे पीले रंग की हो जाती हैं और निचली सतह पर सफेद रंग की फफूँद उग जाती है। रोग की बाद की अवस्था में बालियों में दाने बनने से पहले पुष्प भाग हरे रंग के पतले धागे की तरह हो जाते हैं।

नियंत्रण :

(1) बोने से पूर्व 1 किग्रा बीज को थीरम 2.50 ग्राम से शोधित कर लेना चाहिए।

(2) खड़ी फसल में प्रारम्भ में जिंक कार्बोमेट 2 किग्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 7-10 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें।

(3) रोग रोधी प्रजातियाँ जैसे पी.एच.बी.-14 बोयें।

2. कन्डुआ रोग

कारक -टालिपोस्पोरियम पेनीसिलेरी

लक्षण –

यह रोग दाने बनने के समय स्पष्ट होता है। रोग ग्रसित दाने चमकीले हरे रंग के हो जाते हैं तथा बाद में काले पाउडर से भर जाते हैं जो सतह के फटने पर काले पाउडर के रूप में बिखर जाते हैं।

नियंत्रण -

(1) फसल चक्र अपनायें।

(2) कार्बक्सिन 25 प्रतिशत का छिड़काव करें।

(3) रोग रोधी प्रजातियों जैसे पी.एच.बी.-14 बोयें।

3. अरगट

कारक- क्लेवीसेप्स माइक्रोसेफेला

लक्षण –

पुष्प पत्रों से गुलाबी या हल्के शहद के रंग के छोटी-छोटी बूंद के रूप में निकलते हैं। बाद में गहरे रंग के कड़े हो जाते हैं जिन्हें स्क्लेरोशिया कहते हैं। इसे ही अरगट कहते हैं जिनमें अल्कलायड होते हैं जो जानवरों के लिए जहरीले होते हैं।

नियंत्रण –

1. 20 प्रतिशत नमक के घोल में बीज को भिगोते हैं जिससे स्क्लेरोशिया तैरने लगते हैं। उसे निकाल कर बीज को साफ पानी से धोकर सुखाने के बाद प्रयोग करें।
2. खड़ी फसल में डाइफोलेटान 40 प्रतिशत के 1.5 किग्रा अथवा जिनेव 75 प्रतिशत को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

ज्वार

1. अनावृत्त कंडुआ

कारक -स्पेसिलोथीका सोरथाई।

लक्षण-

केवल दाने रोग ग्रसित होते हैं जो काले चूर्ण जैसे पाउडर से भरे होते हैं और सामान्य बीज आकार में बड़े दिखाई देते हैं।

नियंत्रण-

(1) 2.5 ग्राम धीरम प्रति किग्रा बीज के हिसाब से बीज शोधित करने के बाद बोचें।

(2) बीज को 15 मिनट तक कॉपर सल्फेट के 2 प्रतिशत घोल में डुबों दें।

आलोक सिंह तोमर, (मौसम प्रेक्षक) कृषि विज्ञान केंद्र, लखनऊ ,
विजय कुमार यादव, डा राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या
विवेक सिंह, प्राविधिक सहायक ग्रुप सी,कार्यालय (भूमि संरक्षण अधिकारी) गोंडा